ISSN: 2348-3083
SJIF 2016 : 4.44
UGC APPROVED SR. NO. 48612
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

सामुदायिक केन्द्र के रूप में विद्यालय की स्थापन द्वारा गुणवत्ता प्रबन्धन का अध्ययन

कैलाशनाथ गुप्ता, Ph. D.

एसो0.प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष बी0एड़0, एस0जी0पी0जी0कालेज, मालटारी, आज़मगढ़

Abstract

विद्यालय और समाज अपने–अपने कार्यकलापों द्वारा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं जो विचारों के द्वन्दवाद द्वारा प्रतिमान परिवर्तन के रूप में दृश्टिगत होते हैं। ऐसी स्थिति में आज समाज में रहने वाले लोगों और उनकी शिक्षा के आपसी सम्बन्धों के विवेचन का प्रसंगौचित्य है। एक ओर जहाँ विद्यालय समाज में रहने वाले लोगों की शिक्षा का संवाहक है, वहीं दूसरी ओर समाज भी इन विद्यालयों के लिए प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से दिशा निर्देश प्रदान करने वाले अभिकरण के रूप में अपनी भूमिका अदा करता है। आज, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ते प्रयोग के कारण विद्यालय और समाज के अन्तर्सम्बन्धों को नये दृश्टिकोण से देखने की आवश्यकता है तभी वर्तमान में शैक्षिक गुणवत्ता प्रबन्धन के सम्बन्ध में मुखरित चिन्ताओं के बारे में इन दोनों की भूमिकाओं की उचित जानकारी मिल सकेगी।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना–

सृश्टि के प्रारम्भ से ही मानव ने अपने–अपने समाज के विभिन्न कार्यकलापों द्वारा प्राप्त अनुभवों के आधार पर अपना जीवन–आदर्श स्थापित किया। समयान्तराल में बदलते, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सांस्कृतिक, संदर्भों में इन जीवन–आदर्शों, मूल्यों, रीति–रिवाजों, विचारधाराओं में भी परिवर्तन होते गये। इसके दृश्टिगत नूतन विचारधाराओं के अभ्युदय ने समाज की परम्परागत प्रणाली में बदलाव को एक नूतन आयाम प्रदान किया। इस बारे में हेगेल का विचारों का द्वन्द्ववाद अपनी स्पश्ट राय प्रकट करता है जिसमें विचारों का घात ? प्रतिघात और संघर्श समाज में हमेशा परिवर्तन की दिशा का संकेत करता है। जिसे आज हम प्रतिमान–परिवर्तन के रूप में जानते हैं। अतः प्रतिमान परिवर्तनों के इस दौर में समाज में आये बदलावों, समाज में रहने वाले लोगों, शिक्षा और शिक्षा की भूमिका इन सबके अन्तर्सम्बन्धों को तलाशने की जरूरत है।

व्यक्ति की निजी आवश्यकताओं, उसके हितों की सुरक्षा एवं उसका संरक्षण तथा उसके कार्यों को सुव्यवस्थित और शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न करने के लिए ही समाज का गठन हुआ है। समाज की आव यकताएं और व्यक्ति की आवश्यकताएं परस्पर अन्योन्य–क्रिया करती हैं। इस दृश्टि से सामाजिक चेतना को समाज का मुख्य तत्व माना जाता है जो सामाजिक सम्बन्धों के एक जाल के रूप में दृश्टिगत होती है। किसी निश्चित भूभाग में इस प्रकार के सामान्य जीवन व्यतीत करने वाले लोगों से ही समुदाय का गठन होता है। प्रत्येक समुदाय से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी परम्पराओं, जीवन मूल्यों, आदर्शों, मान्यताओं आदि को सुरक्षित रखे। प्राचीन समय में मानव समुदाय के आदर्श, जीवन मूल्य ज्ञान आदि सीमित थे परन्तु जैसे–जैसे समय व्यवतीत होता गया इन आदर्शों एवं मूल्यों में भी विकास व विस्तार होता गया। इस प्रकार इन जीवन आदर्शों, मूल्यों, मान्यताओं आदि के संरक्षण हेतु विद्यालय व शिक्षण संस्थाओं का उदय हुआ। विद्यालय समुदाय के इन जीवन मूल्यों, आदर्शों संस्कारों,

परम्पराओं आदि को न केवल पोशित करता है वरन् इन्हें भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित भी करता है ताकि समुदाय का आस्तित्व अक्षुण्ण रह सके। इस महत्वपूर्ण कार्य के सम्पादन में विद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका मानी गयी है। समुदाय जहाँ एक ओर अपने आदर्शों, मूल्यों, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक मान्यताओं और आवश्यकताओं के सम्बन्ध में विद्यालय को प्रभावित करता है, वहीं दूसरी तरफ विद्यालय समुदाय की आवश्यकताओं की पूर्ति, उसकी समस्याओं, उसके भावी स्वरूप के निर्धारण आदि के सन्दर्भ में समदाय पर अपना असर डालता है। इस प्रकार विद्यालय और समुदाय का अपना घनिश्ठ सम्बन्ध है। जान डीवी ने कहा है कि विद्यालय समाज का प्रतिनिधित्व तभी करता है जब वह समाज में अपनी मुख्य भूमिका अदा करे और समाज विद्यालय के कल्याण के लिए प्रयास करे। अतः विद्यालय का पृथक अस्तित्व नहीं होना चाहिए अपितु उसे समाज का अभिन्न अंग होना चाहिए।

भूमण्डलीयकरण और नूतन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ते प्रयोग शिक्षाा, शिक्षा की प्रवृत्ति, उसकी दिशा आदि को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। आज शैक्षिक निवेश में परिमाणात्मक वृद्धि के फलस्वरूप शिक्षा में गुणवत्ता विकास और गुणात्मक प्रबन्धन सम्बन्धी चिन्ताएं मुखरित हुई हैं। अतः विद्यालयों की भूमिका का प्रसंगौचित्य स्पश्ट है।

इस प्रपत्र के माध्यम से उन तथ्यों को उजागर करने का प्रयास किया गया है कि विद्यालय किस तरह से सामुदायिक केन्द्र के रूप में समाज की आकांक्षाओं के अनुरूप शैक्षिक गुणवत्ता के प्रबन्धन के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, लोकतान्त्रिक, नैतिक मूल्यों के गुणवत्ता प्रबन्धन में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी का निर्वहन कर सकते हैं।

विद्यालय और समाज के आपसी सम्बन्धों पर किए गये अध्ययनों से पता चलता है कि जहाँ विद्यालय एक ओर समाज को प्रभावित करता है वहीं दूसरी ओर वह समाज से प्रभावित भी होता है। विद्यालयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समुदाय की आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य करें। समाज में प्रचलित मान्यताओं, रीति–रिवाजों, आदर्शों, मूल्यों से भावी–पीढ़ी को परिचित कराने की जिम्मेदारी विद्यालयों की ही होती है। इस कार्य को विद्यालय प्रभावी ढंग से तभी कर सकते हैं जब वे स्वयं एक समुदाय के रूप में कार्य करेंगे। इस दृश्टि से विद्यालयों को समुदाय के निकट लाने की जरूरत है तभी विद्यालय समाज में न केवल भौक्षिक बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, लोकतांत्रिक आदि सभी प्रकार की गुणवत्ता के प्रबन्धन में अपनी सार्थक भूमिका अदा कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण बातें अधोलिखित हैं–

1. बालकों की बौद्धिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक शिक्षा के बारे में अपने दायित्वों का निर्वहन करें।
2. बदलती सामाजिक आव यकताओं और लोगों की आकांक्षाओं के अनुरूप छात्रों को शिक्षा प्रदान करना।
3. पास–पड़ोस में उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से बालकों को सीखने का अवसर उपलब्ध कराना।
4. विद्यालय में ऐसे शैक्षिक वातावरण का निर्माण करना जिससे छात्र सामाजिक, नैतिक, लोकतांत्रिक आदि दृश्टियों से उत्तम नागरिक गुणों से युक्त हो सके।
5. समाज में प्रचलित सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परम्पराओं, आदर्शों एवं जीवन मूल्यों को समझने और उन्हें अपनाने में छात्रों की सहायता करना।
6. समाज में व्याप्त कुरीतियों, बुराईयों आदि को दूर करने हेतु छात्रों को शिक्षित करना और उनमें नेतृत्व करने की क्षमता विकसित करना।
7. बच्चों में किसी भी कार्य को आत्मविश्वास के साथ करने और उनमें आत्मनिर्भरता के गुणों का विकास करना।

8. विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक उत्सवों, त्यौहारों आदि के अवसर पर अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह करना।
9. बालकों को अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के बारे में जानकारी प्रदान करना।
10. समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृश्ट कार्य करने वाले महत्वपूर्ण विद्वानों, समाज–सुधारकों और समाज की स्थानीय बातों की सम्यक जानकारी रखने वाले लोगों को विद्यालय कार्यक्रमों में आमन्त्रित करना।
11. विभिन्न प्रकार की धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पुरातात्विक महत्व की सामुदायिक सम्पत्तियों की सुरक्षा हेतु लोगों को जागरूक बनाना।
12. शिक्षक–अभिभावक संघों की स्थापना करके विभिन्न प्रकार के ज्वलन्त सामाजिक मुद्दों पर विचार–विमर्श करना।
13. विद्यालय में समय–समय पर सामुदायिक गोश्ठियों, प्रदर्शनियों, मेलों आदि का आयोजन करके समाज में जन जागरूकता लाना।
14. समाज के अशिक्षित प्रौढ़ों हेतु विद्यालय में रात्रिकालीन प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों का संचालन करना।

इस प्रकार विद्यालय एक सामुदायिक केन्द्र के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करते हुए सभी प्रकार के गुणवत्ता प्रबन्धन में अपना अमूल्य योगदान कर सकते हैं। इसी के साथ यदि इसके दूसरे पहलू पर विचार किया जाय तो समाज भी विद्यालयों को ऐसे सुझाव दे सकते हैं, जिससे गुणवत्ता प्रबन्धन के मुद्दों को साकार रूप दिया जा सकता है। इस सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं की चर्चा इस प्रकार की जा सकती है–

1. विद्यालयी–पाठ्यचर्या निर्माण के समय उन बिन्दुओं का सुझाव देना जिससे बालकों की रूचियों, योग्यताओं, क्षमताओं, अभिवृत्तियों और सृजनात्मक शक्तियों का विकास हो सके।
2. बालकों को शैक्षिक एवं व्यावसायिक कुशलताओं के अर्जन में पाठ्यचर्या में उचित स्थान प्रदान करने हेतु समाज में उपलब्ध संसाधनों के प्रयोग से परिचित कराना।
3. बालकों में श्रमदान की भावना का विकास करना।
4. समाज में आए बदलावों के सन्दर्भ में पाठ्यचर्या में इन बदलावों के अनुरूप विशय–वस्तु और अधिगम अनुभवों को उचित स्थान प्रदान करना।
5. समाज हेतु उपयोगी एवं सार्थक परिणामों की प्राप्ति के लिए विद्यालयी कार्यों का अनुश्रवण करना।
6. समाज में सभी आयु वर्गों, समुदायों आदि में नैतिक एवं लोकतांत्रिक चरित्र के विकास में विद्यालयों के साथ सामंजस्य स्थापित करना।
7. मानवता, ईमानदारी, सहयोग की भावना, उदारता, सहिश्णुता, संवेदना, नम्रता, दयालुता आदि सामाजिक मूल्यों के विकास में विद्यालयों के साथ सहभागिता निभाना।
8. पास–पड़ोस में अच्छे एवं स्वस्थ पर्यावरण के सृजन में विद्यालयों को सहयोग प्रदान करना।
9. विद्यालयों में समाज सेवा संघों की स्थापना करके सामुदायिक जीवन की समस्याओं पर विचार–विमर्श करना।
10. पर्यटन कार्यों के माध्यम से बालकों को समुदाय की वास्तविक परिस्थितियों से परिचित कराना।
11. राश्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से सामुदायिक क्रिया–कलापों के बारे में छात्रों को अवगत कराना।
12. बालकों को समाज की स्थानीय संस्थाओं जैसे– ग्राम पंचायत, न्याय पंचायत, क्षेत्र पंचायत, टाउन एरिया, नगर निगम, नगर महापालिका, जिला परिशद आदि के कार्यों से परिचित कराना।

13. अस्पताल, डाकघर, सरकारी बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थलों आदि के महत्वपूर्ण योगदानों से परिचित कराना।
14. भौगोलिक और प्राकृतिक महत्व के साधनों यथा– नदी, पर्वत, झील, तालाब आदि के बारे में जागरूकता लाने में सहयोग प्रदान करना।
15. विभिन्न त्यौहारों पर मनाए जाने वाले कार्यक्रमों यथा–खेलकूद, मेलों, नाटकों, प्रदर्शनियों का आयोजन करना।

अन्त में कहा जा सकता है कि शिक्षा सभी कालों में सम–सामयिक सामाजिक परिस्थितियों की संवाहक रही है और समाज में जब–जब परिवर्तन हुए हैं विद्यालय शिक्षा के माध्यम से इन परिवर्तनों को समाज द्वारा स्वीकार्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते रहे हैं। समाज में होने वाले व्यापक परिवर्तनों के अनुरूप विद्यालय स्वाभाविक रूप से अपने स्वरूप में परिवर्तन के लिए उद्यत रहें तथा समाज भी इसी प्रकार की भावना से कार्य करे तो विद्यालय सामुदायिक केन्द्र के रूप में भौक्षिक गुणवत्ता प्रबन्धन के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, लोकतांत्रिक, सांस्कृतिक मूल्यों सम्बन्धी गुणवत्ता प्रबन्धन में अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं।

सन्दर्भ–

पाण्डे, आर0एस0(2005), शिक्षा की दार्शनिक और समाजशास्त्रीय पृश्ठभूमि, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
पाठक, पी0डी0 (1974), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
यादव, एस0आर0 (1998), पाठ्यक्रम विकास। आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
इग्नू (2008), शिक्षा और समाज (ई0एस0334) खण्ड–2, भारतीय सामाजिक सन्दर्भ में शिक्षा, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली।
शर्मा, आर0ए0 (2007) पाठ्यक्रम विकास, मेरठ, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।
चौबे, एस0पी0, चौबे, ए0 (2004), एजुकेशन इन ऐन्सिएण्ट मेडिवल इण्डिया, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग प्रा0लि0।